अंक-1, सत्र-1, 2020-21, (फ्रेशर्स विशेषांक)

प्रवाह

हिन्दी प्रेस क्लब

हिन्दी प्रेस क्लब

अंदर पढ़िए

संपादकीय 2

ऑनलाइन सेमेस्टर का फंडा 4

ऑनलाइन पोर्टल 6

ऑनलाइन बनाम ऑफ़लाइन 7

बिट्सियन फेस्ट 9

हिन्दी प्रेस क्लब

संपादकीय

आदर, आदाब, अभिनंदन, आभार!

प्रिय युवा साथियों,
मैं आप सभी का स्वागत करता हूँ इस अद्भुत खेल में जिसका नाम है 'कौन बनेगा बिट्सियन'। बिरला जी की इस जादुई नगरी, पिलानी के मंच पर खेला जाने वाला यह खेल बड़ा ही रोमांचक है। दुर्भाग्यवश, कुछ अभूतपूर्व परिस्थितियों के चलते आज आप इस मंच पर उपस्थित नहीं हो पाए हैं। लेकिन खुशी की बात तो यह है कि भारत के विभिन्न कोने से आए सभी छात्र/छात्राएँ अपने-अपने घरों में रहते हुए भी 'बिट्स पिलानी' रूपी हॉटसीट पर विराजमान हो चुके हैं। तो चलिए, ज्ञान, मनोरंजन और अनुभव के इस विशाल समुद्र में डुबकी लगाने से पहले, मैं सभी नए खिलाड़ियों का अभिवादन करता हूँ और जल्द ही खेल के नियम समझा देता हूँ। आठ से दस सेमेस्टर आएँगे आपके सामने। पहला पड़ाव है PS1 का और दूसरा पड़ाव है PS2, जिसके बाद graduation नामक जैकपोट का द्वार खुल जाता है। कुछ सवालों का जवाब आप अपने ज्ञान एवं अनुभव से दे सकते हैं तो कई बार अनुमान लगाना भी एक बेहतर विकल्प हो सकता है। यदि कहीं पर भी आपको कोई कठिनाई हो तो बेझिझक सीनियर, मित्र, अध्यापक, क्लब एवं डिपार्टमेंट रूपी खास लाइफ़-लाइनों की सहायता ले सकते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आप यहाँ से ढ़ेर सारी याद रूपी राशि लेकर के जाएँ!

सभी बिट्सियन्स के दिलों में बिट्स पिलानी की यह हॉटसीट एक विशेष स्थान रखती है। किसी के लिए यह एक चाहत है तो किसी के लिए एक नए सफ़र की शुरुआत। अक्सर खिलाड़ी इसे अपने जीवन में आई चुनौतियों का समाधान मान लेते हैं, मान–सम्मान का आधार मान लेते हैं, अपने आत्मविश्वास को परखने का और काबिलियत को साबित करने का एक अवसर मान लेते हैं। तो क्या बिट्स पिलानी में वाकई वो जादू है? क्या यह हॉटसीट वाकई में आपके setback से comeback का ज़रिया है? यह तो सिर्फ़ खिलाड़ियों के देखने का नज़रिया है। ज़रिया तो आप खुद हैं। यह कॉलेज तो केवल आपकी हिम्मत और हौसले को प्रोत्साहन देती है और साथ ही आपको स्वयं से मिलती है।

कौन सी लकड़ी है इस हॉटसीट की मज़बूती का राज़? इस मंच के द्वार में कौन सी ऐसी चाबी लगती है जो खिड़कियों के बंध जज़्बात और उनकी ख्वाइशों में लगे तालों को खोल देती है? कौन सी ऐसी अटूट डोर है जिसने इस मंच से कई alumni को आज भी बांध रखा है? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि दरअसल, हॉटसीट की जो लकड़ी है वो इसपर बैठने वाले सभी खिलाड़ियों के परिश्रम से खीस-खीस कर मजबूत हुई है। इस मंच की चाबी में भरोसा, उम्मीद, हिम्मत एवं प्रोत्साहन जैसी भावनाओं का बेजोड़ मिश्रण है जो यहाँ आने वाले हर खिलाड़ी को अपने खोए हुए आप से मिलवाने की और उनके सपनों में उड़ान भरने की क्षमता रखता है।

अंततः, मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि एक बच्चे के मन की भांति हर पल, हर परिस्थिति के लिए उत्सुक रहिए और अपने समुचित विकास के लिए इस सफर का भरपूर लाभ उठाएँ।
शुभकामनाएं...

ऑनलाइन सेमेस्टर का फंडा

कोरोना काल के चलते हम सबके जीवन में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। शिक्षण व्यवस्था में भी अनेक प्रकार के नए तकनीकी-शिक्षण साधन आ चुके हैं। एक समय में तख़्त पर चॉक से पढ़ाने के अलावा कोई और साधन मानो सुना ही नहीं था, परन्तु अब तो जैसे यह बीते कल का एक पुराना साधन हो गया। इंटरनेट भी जहाँ सिर्फ मौज-मस्ती या अधिक जानकारी प्राप्त करने का मार्ग था, आज एक मूलभूत ज़रूरत बन चुका है।

इसका आभास तो आपको भी अब तक अच्छे से हो चुका होगा। यदि हमारे कॉलेज की बात करें, तो यहाँ यूँ तो नालंदा एवम अन्य ऑनलाइन प्लेटफार्म का इस्तेमाल प्रचलित था, परंतु पठन-पाठन की दृष्टि से इंटरनेट वो नवजात शिशु है जो अब पूर्णतः सुदृढ़ हो चुका है। एलटीसी या NAB की जगह अब गूगल मीट और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स ले चुके हैं। आकलन करें तो यह पाएंगे की इस कारण से प्रोफेसर और विद्यार्थियों, दोनों को ही अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। बिजली का अनियमित रूप से आना-जाना, इंटरनेट की तीव्र गति हेतु आवश्यक सिग्नल भी हर जगह मौजूद नहीं हैं। घर में सबके बीच में रहते हुए पढ़ना भी एक बड़ी चुनौती साबित हो रही है। सिक्के के दूसरे पहलू को जानना भी महत्वपूर्ण है। इसी ऑनलाइन सेमेस्टर की बदौलत हमें अपने परिवार जन से इतने वर्षों बाद समय व्यतीत करने का अवसर मिला है। पढ़ाई और उसके पश्चात नौकरी की कशमकश में हम जिनके लिए इतनी मेहनत कर रहे हैं, उन्हें ही भूल जाते हैं। यह समय हमें अवसर देगा उस भूले-बिसरे पहलू पर से धूल की परत को समय और प्रेम से हटाने का। इसी के साथ हम भविष्य के बदलावों के लिए भी तैयार हो रहे हैं, ताकि भारत के हर कोने तक ऑनलाइन माध्यम से सूचना संचार एवं शिक्षण व्यवस्था का प्रचार हो सके।

हाल ही में आए डायरेक्टर के मेल से भी यही सिद्ध होता है कि इन विषम परिस्थितियों में हमें सकारात्मकता को कायम रखते हुए डटकर इस समस्या का सामना करना होगा। इस समय का सदुपयोग कर ही हम इस विपरीत समय पर भी विजय पा सकते हैं।

आशा है आप लोग इस सकारात्मक मानसकिता के साथ अपने जीवन के इस नए पड़ाव का शुभारंभ करेंगे!

ऑनलाइन पोर्टल

अभिवादन, 2020 के नए बैच का हमारे बिट्स के जादुई परिवार में स्वागत है। हम आपके लिए कॉलेज जाने में सक्षम नहीं होने के कारण दुखी हैं। हम सभी ऑनलाइन सेमेस्टर कर रहे हैं, लेकिन मेरा विश्वास करो, कॉलेज को देखने की देरी इसके लायक होगी और उम्मीद है कि हम अगले सेमेस्टर में कॉलेज में मिलेंगे।
इसलिए अब जब कॉलेज ऑनलाइन शुरू हो गया है, तो यह लेख आपको सेमेस्टर के साथ शुरुआत करने और प्रक्रिया को समझने में मदद करने के बारे में है।

नालंदा- हमारे कॉलेज द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाने वाला एक मंच है, जहाँ पाठ्यक्रम और ग्रेड के बारे में सभी जानकारी दी जाती है। छात्र अपने बिट्स ईमेल पते के माध्यम से नालंदा पहुंचते हैं जो मुझे लगता है कि सभी को अब तक मिल गया होगा। आप नालंदा पर व्याख्या रिकॉर्डिंग, घोषणाओं और अन्य सामान पा सकते हैं।
S.W.D (छात्र कल्याण विभाग) - महान महत्व का एक और मंच है। यह बकाया राशि की जानकारी, यूनियनों और परिषदों और रैगिंग, प्रवासन के नियमों से संबंधित अन्य जानकारी देता है। आप एनएसएस और निर्माण संगठन के विवरण और यह कैसे काम करता है, इसके बारे में भी देख सकते हैं।
पुस्तकालय- हम हमेशा परिसर में अपने शानदार पुस्तकालय के बारे में गर्व करते हैं जहां हम परीक्षा से पहले अपनी तैयारी के दिनों में बैठकर रातें बिताते थे। लेकिन यह ऑनलाइन सेमेस्टर में भी बेहद सहायक है क्योंकि लाइब्रेरी हमें पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रमों में उपयोग की जाने वाली अन्य अध्ययन सामग्री के मुफ्त ऑनलाइन पीडीएफ़ प्रदान कर रही है।
AUGS-AGSR DIVISION - ये नाम आपको बहुत बार सुनने को मिलेगा "'AUGSD"। विद्यार्थियों के टाइम-टेबल से लेकर उनकी परीक्षा किस प्रकार होगी, इन सब के निर्णय augsd करती है। शुरुवात में दस्तावेज़ जाँच से लेकर टाइम-टेबल बनाने तक और उसके बाद परीक्षा तक ये हर विद्यार्थी का ध्यान रखते है।टाइम-टेबल मैनेजमेंट की पूरी टीम छोटी-सी होने के बावजूद भी बहुत अच्छे से सब कुछ संभाल लेते है।

ऑनलाइन बनाम ऑफ़लाइन

जैसा कि आप सब जानते हैं कि विश्व में फैली कोरोना महामारी एक विद्यार्थी के जीवन और उसकी पढ़ाई पर गहरा असर कर रही है। साल बर्बाद हो जाने का विचार ही हर उस विद्यार्थी को परेशान कर चुका होगा जो अपने कॉलेज जीवन की शुरुआत की प्रतीक्षा कर रहा था। आखिरकार अब उस प्रतीक्षा का अंत हो चुका है और इसी उपलक्ष्य में हम सम्पूर्ण फ्रेशर-2020 बैच का स्वागत करते हुए उन्हें उनके सेमेस्टर से जुड़ी कुछ बातों से अवगत करना चाहते हैं।

सेमेस्टर की पढ़ाई को ऑनलाइन जारी रखना सभी के लिए एक नया और विचित्र अनुभव साबित हुआ है। सुबह आठ बजे अपने कम्प्युटर के सामने कैमरा व माइक्रोफ़ोन बंद करके बैठ जाने में भी अलग मज़ा है। हाँ, सही सोच रहे हैं आप, इस बात पर तो प्रोफ़ेसर भी ध्यान नहीं देते कि क्या बच्चे ध्यान से सुन भी रहे हैं या नहीं। ख़ैर, यह तो विद्यार्थी पर ही निर्भर करता है कि उसे क्या करना है। कक्षाओं का समय सुबह 8 से शाम 7 बजे के बीच में होता है। सभी छात्रों को अपनी अपनी कक्षाओं का चयन करने का अवसर मिलता है। यदि बात करें परीक्षाओं की तो चिंतित न हों; असंख्य टेस्ट आप सभी का इंतज़ार कर रहें हैं। अब तो लगभग सभी प्रोफ़ेसर आज के आधुनिक एवं तकनीकी यंत्रों से भलिभांति वाकिफ़ हो चुके हैं। आमतौर पर टेस्ट गूगल फ़ॉर्म के ज़रिये लिए जाते हैं। एम.एस. टीम, नालंद जैसे भी कई प्लैटफ़ार्म हैं जिनका प्रयोग समयानुसार होता है। कई विषयों में मूल्यांकन हेतु Scan and upload का माध्यम चुना जाता है जिसमें छात्र सवालों का जवाब सफ़ेद कागजों पर लिखकर ऑनलाइन अपलोड कर देते हैं।

एक आम बिट्सियन की ज़िंदगी केवल पढ़ाई तक ही सीमित नहीं रहती है। दोस्तों के साथ गपशप एवं अन्य सकारात्मक गतिविधियों में भाग लेना भी अत्यंत ज़रूरी है। गूगल मीट पर आकर विड़ियो कॉल करना, डिस्कोर्ड पर रहकर among us, COD जैसे खेल खेलना, हमें घर पर रहते हुए भी एक दूसरे से जोड़े रखता है। Social media भी इस दौरान एक अहम भूमिका का रूप लेकर उभरा है।

बिट्स जैसे कैम्पस में हर एक बिट्सियन का कॉलेज जीवन अविस्मरणीय यादों के गुलदस्ते जैसा है। पिलानी में हर दिन एक नया अनुभव लेकर आता है। ऑफलाइन सेमेस्टर में भी कक्षाएँ सुबह आठ बजे से प्रारम्भ हो जाती हैं और शाम पाँच या छह बजे तक चलती हैं। कैम्पस की विशालता के कारण सभी हॉस्टल साइकलों से भरे होते हैं। पाचास मिनट की हर क्लास के बाद दस मिनट का अंतराल होता है। वैसे पहले वर्ष के शुरूआत में अधिकतर विद्यार्थी के मन में अपनी पढ़ाई को लेकर काफ़ी उत्साह भरा होता है। यह सच है कि कॉलेज की पढ़ाई स्कूल की शिक्षा से बहुत भिन्न एवं विस्तृत होती हैं इसलिए अपने कॉलेज का पहला वर्ष हर एक विद्यार्थी को किसी विशेष प्रयोग की तरह लगता है। ROTUNDA, NAB जैसे अनेक स्थान हैं जहाँ जाकर टहलने का आनंद ही अलग है। कैम्पस में ANC के नाम से मशहूर 'ALL NIGHT CANTEEN' एक ऐसी जगह है, जहाँ पर कई प्रकार के स्वादिष्ट पकवान मिलते हैं। यहाँ पर भी आपको कई बच्चे अलग अलग व्यंजनों का लुफ़्ट उठाते मिल ही जाएँगे।

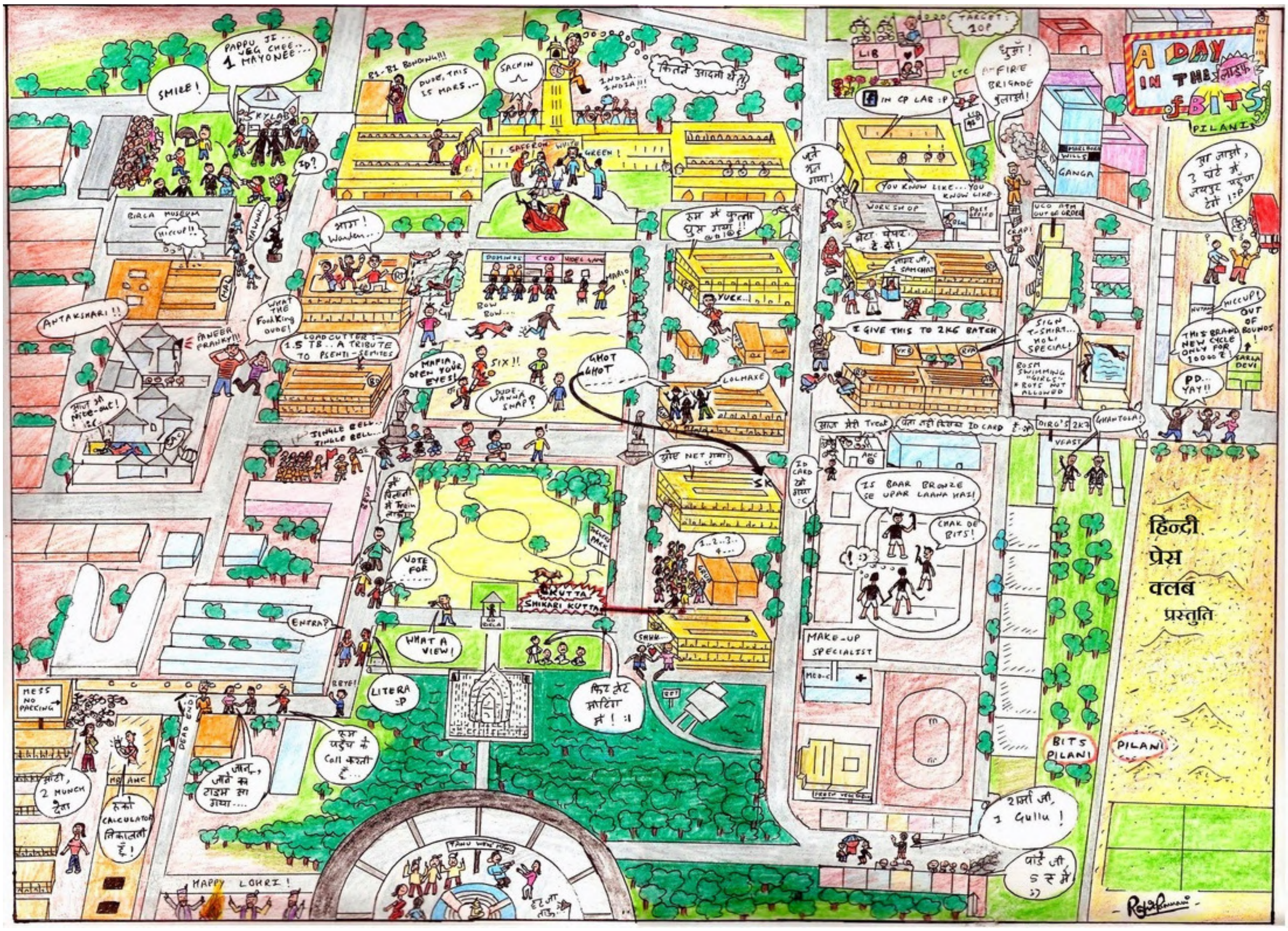

बिट्सियन फेस्ट

कल फ़ेसबुक पर रोज़ की भाँति समय नष्ट करते-करते नज़रे वाणी पेज की एक पंक्ति पर पड़ी और आँखे सजल हो उठीं – "पिलानी शहर से पुराना नाता रहा होगा कोई, यूँ ही तो रेगिस्तान में दिल को ठंडक नहीं मिलती!" मानो एक पल में पिछले एक साल की सारी यादें, जो किसी अलमारी में हमेशा के लिए संजो कर रखी थीं, मेरी आँखों में उतर गईं और क्षणभर के लिए मैं दोबारा उसी क्लब टेंट में स्वयं को सोता देख पाया, जहाँ शायद मुझे दो घंटे पहले यह लेख पूरा करना था।

आप सभी के ज़हन में भी एक प्रश्न अवश्य होगा- क्या रखा है पिलानी में? ऐसा क्या ही है उस रेगिस्तान के प्रदेश में जहाँ न ठण्ड की कोई सीमा है और न गर्मी की कोई थाह? हाँ, शायद पिलानी एक गाँव हो, पर इस गाँव से नाता जोड़कर तो देखो। गत 7 महीने से घर पर बैठे हम जैसे अनगिनत विद्यार्थियों में शायद कुछ ही ऐसे होंगे जो दिन में कम से कम एक बार ही सही, पिलानी का नाम न लेते हों। और सच पूछो, तो इस समय जितनी याद मुझे ANC के खाने और लाइब्ररी में मारी उन चाय की चुस्कियों की आती है, उससे कई ज़्यादा याद उन कॉल्स की आती – "भाई, जल्दी टेंट पर आ, कोई नहीं है।" ,या, "प्रोफ शो की एंट्री दस मिनट में शुरू होगी, तब तक चल एक झपकी ले लेते....दो दिनों से गद्दा नसीब नहीं हुआ।" हाँ, मैं बात कर रहा हूँ हम LITE बिट्सियन के ज़िंदगी के सबसे हसीन पलों में से कुछ – हमारे तीन फेस्ट, की। इनके नाम क्या हैं, चलिए इतना तो रहस्य रख सकते। शायद लेख में आ ही जाए।

मैगी और हॉस्टल का रिश्ता तो पुराना रहा है। पते की बात बता रहा हूँ, अगर आपको मैगी का स्वाद न पसंद हो तो जितने दिन घर में हो, आदत डाल लो, बाद में हमे मत कहना कि सीनियर ने बताया नहीं था। हाँ, तो बात मैगी की हो रही थी। ऐसे तो कैम्पस पर हर तरह की मैगी मिलती है पर जो मज़ा स्नैप्स पे सिनिअर के पैसे से SKYLAWNS पर मैगी खाने का हैं, उसका विवरण क्या ही करूँ? तो बात यह है कि किसी भी फेस्ट के पहले, उस फेस्ट में छोटा-बड़ा काम कर रहे हर क्लब-डिपार्टमेंट की तस्वीर ली जाती है जिसे हम 'स्नैप्स' कहते है। सुनने में जितना सरल लगता, उतना है नहीं। दो दिनों के लिए कैम्पस का पूरा माहौल ही बदल सा जाता है। सब के अपने थीम होते है और कोई भी क्लब मजाल है कि दो-तीन घंटे से कम में यह कार्यक्रम पूरा करे। राज़ की बात बताऊँ तो अपने कॉर्ड की जी.पी.एल. के बिना वापस न लौटना।

बात शुरू करते हैं बॉसम से। (इसका फुल-फॉर्म जितनी जल्दी हो सके पता लगा लेना; बहुत जल्द काम आएँगे।) सितम्बर का महीना, गर्मी और बारिश का एक अनूठा संगम और हमारा अपना स्पोर्ट्स फेस्ट। कैम्पस पर घूमो तो हर जगह सिर्फ़ दिल्ली और राजस्थान के कॉलेज के विद्यार्थी ही देखने को मिलते हैं। मेरी ही तरह कई ऐसे लोग होंगे जिन्हें खेल कूद से कोसों मतलब नहीं, पर फिर भी दोस्तों के साथ मस्ती-मस्ती में इधर-उधर घूमने और बाहर से आए लोगों के साथ घंटो बात करने का आनंद अलग ही होता है। किसी को पता नहीं कि अभी मैच किसका चल रहा परन्तु सब आकर बास्केटबॉल कोर्ट में बैठेंगे ज़रूर। प्रोफ शो के नाम पर क्लब में सीनियर को झूठ बोलकर काम LITE लेने के भी अलग ही मज़े होते। अगर आप में से भी कोई ऐसा है जिसने आजतक घर पर गद्दे न उठाए हों, तो हिदायत दे रहा हूँ, रोज़ तीन चार गद्दे उठाकर इधर-उधर चलने की आदत तो डाल ही लो। अगले बॉसम में ट्रेनिंग कम देनी पड़ेगी हमें।

कैम्पस और पिलानी से दूर, ओएसिस का नाम लेना भी शायद अभी गलत होगा। 50वें ओएसिस के लिए जितने सपने हम सबने देखे थे, शायद इतने सपने तो आपने भी "स्टूडेंट ऑफ द इयर" देखकर कॉलेज के बारे में न देखे होंगे। आपने ये तो शायद अब तक पचासों बार सुना होगा कि 96 घंटो का यह निरंतर क्रम अपने में ही अविस्मर्णीय हैं, परन्तु जो मज़ा रात रात-भर कम्बल लेकर क्लब रूम में काम भुला कर 'माफ़िया' खेलने में है, और PLACED सीनियर और ALUMNI से स्टॉल पर ट्रीट लेने में है, उसकी बात ही क्या करनी। कहीं जोर-शोर से गाने बज रहे तो कहीं छोटे-बड़े खेल हो रहे, कहीं प्रोफ शो के नाम पर धूम है तो कहीं कर्नल इवेंट का विस्फोट। दोस्तों और अनजान चेहरों के बीच खुद कि एक नई तलाश का नाम है ओएसिस। इस रेगिस्तान का सबसे पसंदीदा कोना है ओएसिस। हाँ ठीक है, मान लिया मयूर भी ठीक-ठाक था, पर जबतक ऐसे 5-6 बार क्लब सीनियर के फोन न काटो और फिर REVIEW मीट में भर-भर कर डाँट न सुनो, तब तक कुछ अधूरा-सा प्रतीत होता है। वो अक्टूबर की गुलाबी ठण्ड, वो कैम्पस में 4 दिन की छुट्टी, वो हर जगह साज़ और सजावट से उत्फुल यह कैम्पस का रूप, शायद शब्दों में बयान कर पाना उतना ही मुश्किल है जितना इस समय खुद कों संभाल पाना हम सब के लिए। आशा है कि हम सब मिलकर ओएसिस 21 में ये सारी कसर निकाल पाएंगे।अपोजी का तो नाम न ही ले तो बेहतर। बिट्स के नाम में आने वाली इस 'टेक्नोलॉजी' का सही विवरण तो अपोजी ही होता जिसमें नए आविष्कारों और नए पेपर पर भरपूर चर्चा होती है।

'हम सिर्फ़ अपोजी में काम करते हैं' कहने वाले न जाने कितने ही क्लब, डिपार्टमेंट और असौक हैं जो पुनः एक साल की गुमनामी में लुप्त हो गए। शायद अपोजी सम्बंधित कुछ रसमयी बातें बताने में मैं असमर्थ रहूँ, पर जितना काम किया इसके लिए, यह ज़रूर कह सकता कि अगर आपमें से कोई भी रिसर्च में दिलचस्पी रखता हो, तो अपोजी आपको एक सही दिशा दिखाएगी आगे के लिए खुद को तैयार करने हेतु। वरना और कुछ नहीं तो चार-पाँच दिन तक दोस्तों के साथ मस्ती करें और हाँ, क्लब/डिपार्टमेंट का काम न भूले। सीनियर को भी मस्ती करने का समय दे, अपना और उनका काम, दोनों करे।

सच बताऊँ तो फेस्ट के बारे में लिखने को तो शब्द कम पड़ जाएंगे भावनाओं को समेटने के लिए, किन्तु फिर लगता है कि कुछ बातें आपके लिए भी छोड़ दूँ, कि आप स्वयं उन्हें अनुभव करे, और शायद आने वाले बैच को अपने अनुभव बताएं। वो फेस्ट के पहले दोस्तों के साथ मिलकर प्लैन बनाना, घरवालों को अनगिनत बहाने बताना कि क्यों इन छुट्टियों में हम घर नहीं आ सकते और न उनके कॉल का जवाब दे सकते, रात रात भर बाहर घूमना और अंत में सोने के लिए किसी भी क्लब के रूम/टेंट पर जाकर फ़ैल जाना, कभी किसी से नज़रे चुरा कर भागना, तो कभी किसी के सामने दुगने उत्साह के साथ नाचना। ऐसी न जाने कितनी ही यादें ताज़ा हो आई हैं ये लेख लिखते लिखते। शायद आज अगर कैम्पस पर होते तो मैं ओएसिस डे-2 के लेख एडिट कर रहा होता इस समय, पर अब क्या ही बोले। न आप हो हमारे सामने और न हम है अपनी मस्ती में। आशा है कि हम जल्द मिले, और साथ मिलकर अगले फेस्ट का आनंद उठाए।

हिंदी प्रेस क्लब बिट्स परिसर के सबसे पुराने एवं महत्त्वपूर्ण क्लबों में से एक है। हम अक्सर कॉलेज में होने वाली प्रमुख घटनाओं को कवर करते हुए मासिक पत्रिका प्रकाशित करते हैं जिसमें शामिल है लोगों से साक्षात्कार करने से लेकर विशेष अवसरों पर रचनात्मक लेखन कार्य....

हमें तलाश है

- लेखक
- कार्टूनिस्ट
- ग्राफ़िक डिज़ाइनर

संपर्क करें-
मानस (+91 75340 61100), अनुज (+91 72753 94483)

हमसे जुड़ें-
इंस्टाग्राम: @hpc.bits फेसबुक: HPC BITS ब्लॉग: HPC

हिन्दी प्रेस क्लब

निमिषा, अक्षिता, कनिष्क

रीतिक, आदित्य, भूमि, नितिन, अतीक्षा, अमोल, श्यामल, सिद्धार्थ, कृति, प्रखर, व्योम

माणिक्य, वत्सल, प्रत्युष, मनाल, मोहनीश, मानस, आकाश, आदित्य, अनुज

आर्यन, अदिति, भूषण, हार्दिक, संस्कार, लाम्बा, हर्ष, परीश्री,

वासु, रेहान, शाल्मली